RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरंभिक समाज

ONE SHOT

पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...

23 सितंबर 2026 || 03:30 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

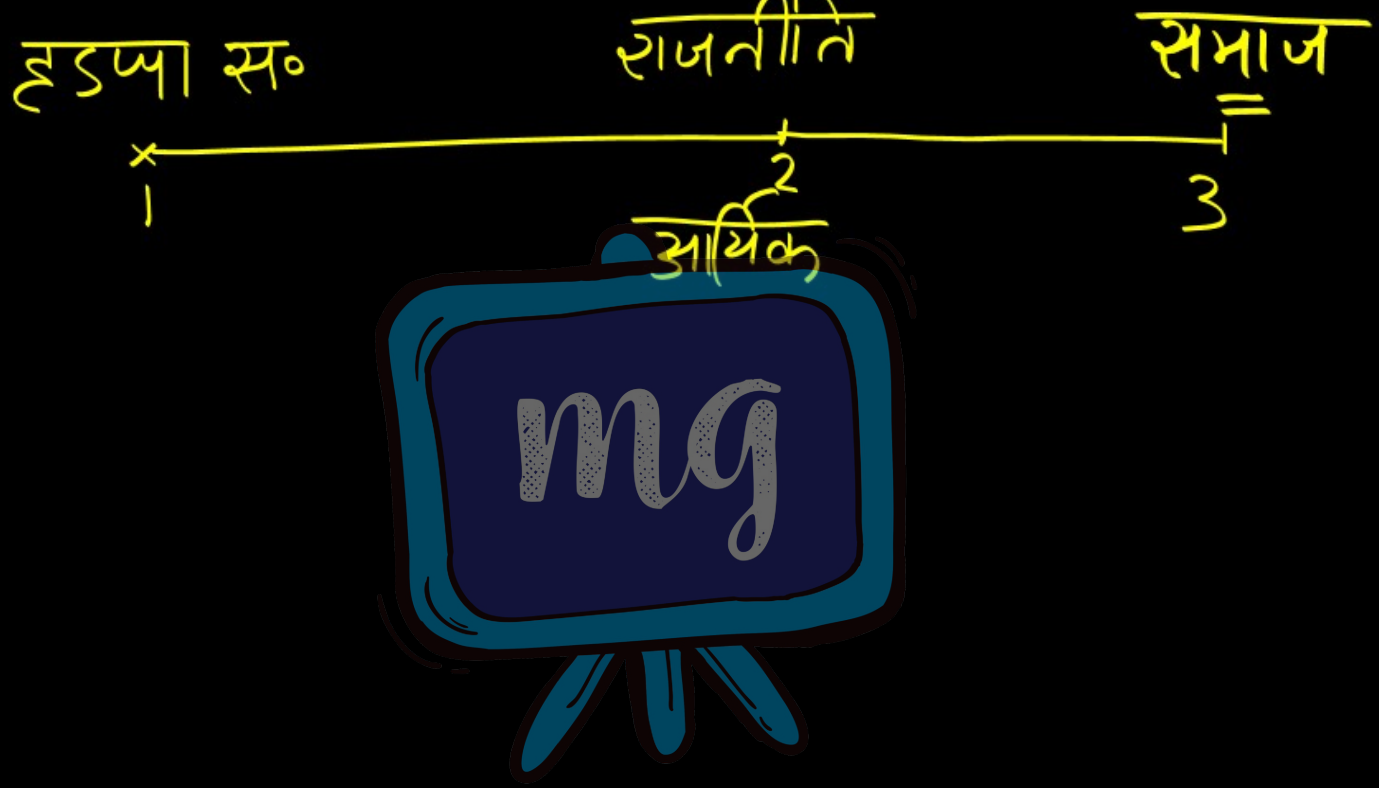

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

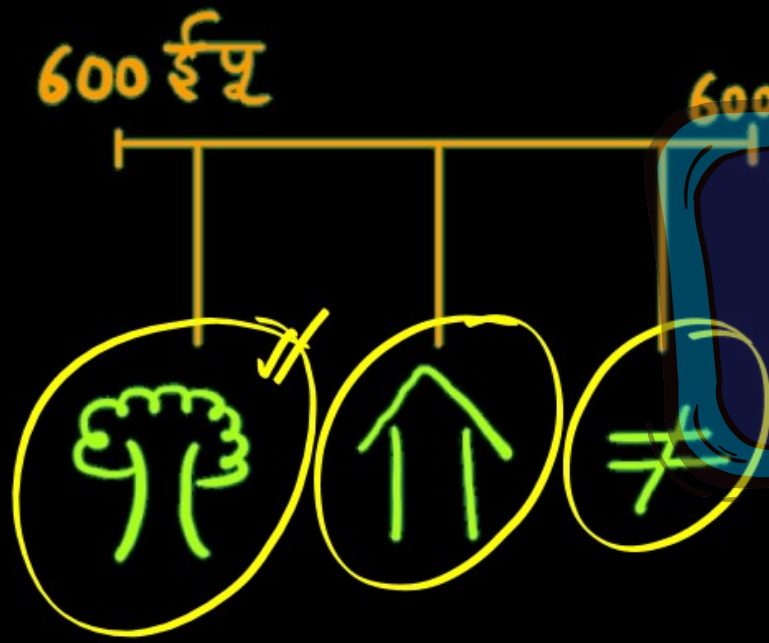

आरम्भिक समाज की स्थिति–

- 600 ई.पू. से 600 ईसवी तक आर्थिक और राजनीतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। इनमें से कुछ परिवर्तनों ने समकालीन समाज पर अपना प्रभाव छोड़ा। जैसे–
  - (i) वन क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ जिससे लोगों की जीवनशैली में परिवर्तन हुआ।
  - (ii) शिल्प विशेषज्ञों के एक सामाजिक समूह का उदय हुआ।
  - (iii) संपत्ति के असमान वितरण ने सामाजिक विषमताओं को अधिक प्रखर बनाया। (बड़े जमींदार, किसान व श्रमिक वर्ग बनें)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

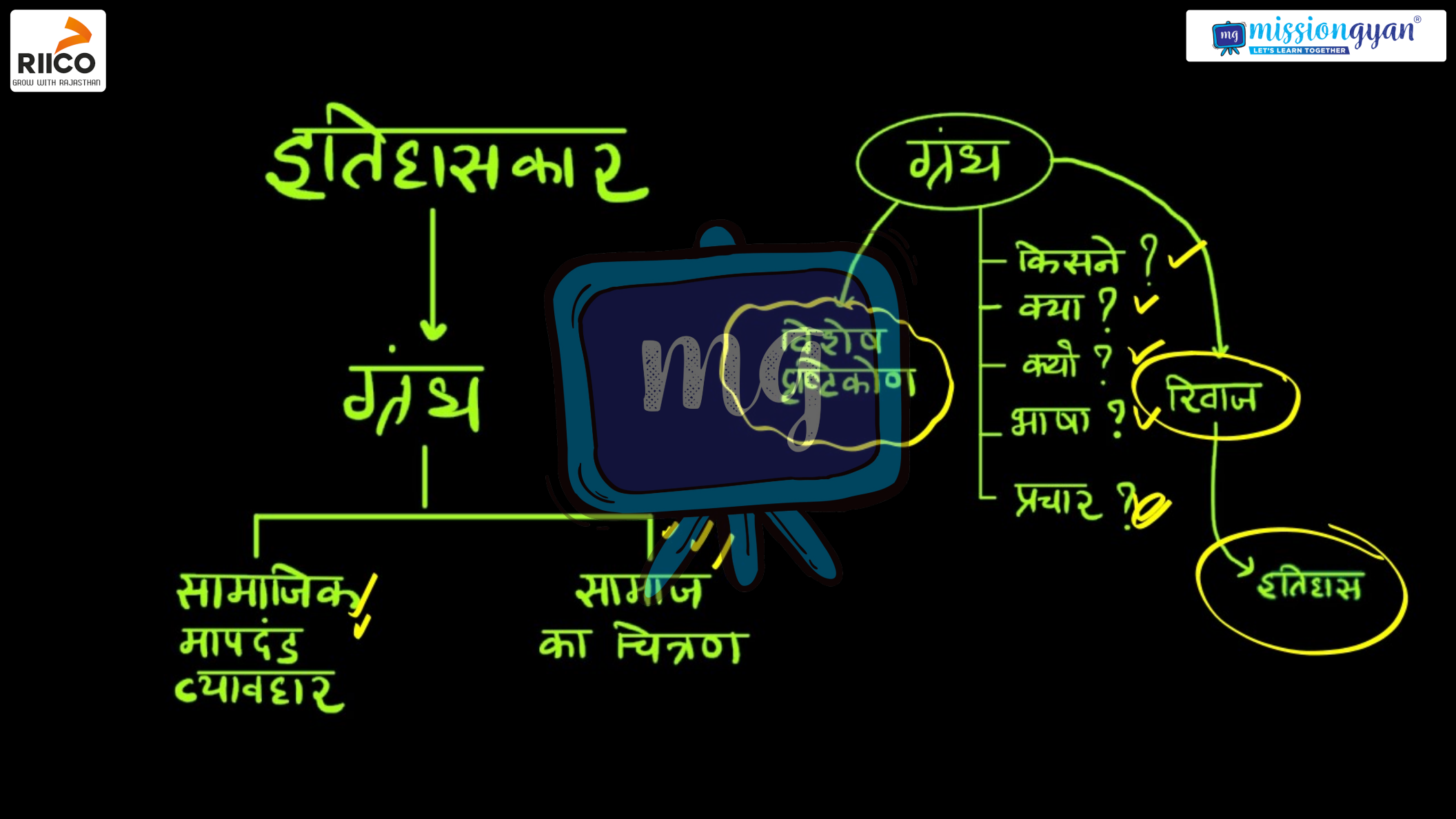

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रंथ → प्राकृत

→ जनसामान्य

सबके लिए



→ विशेष वर्ग

→ तमिलनाडु क्षेत्र

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

16 महाजनपद



कुरु

कौरव
v/s
पाण्डव

↓

युद्ध

↓

राज्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



महाभारत का एक दृश्य, मृणमयी मूर्तिकला (पश्चिम बंगाल) (लगभग 17वीं शताब्दी)

महाभारत का विश्लेषण

- उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक है।
- महाभारत में 1 लाख से अधिक श्लोक हैं।
- इसकी रचना लगभग 1000 वर्षों तक हुई।
- मुख्य कथा दो परिवारों के युद्ध पर आधारित है।
- इसमें विभिन्न सामाजिक समूहों और उनके आचार-व्यवहार का वर्णन है।
- इसके पात्र कई बार सामाजिक मानदंडों का पालन करते दिखते हैं।

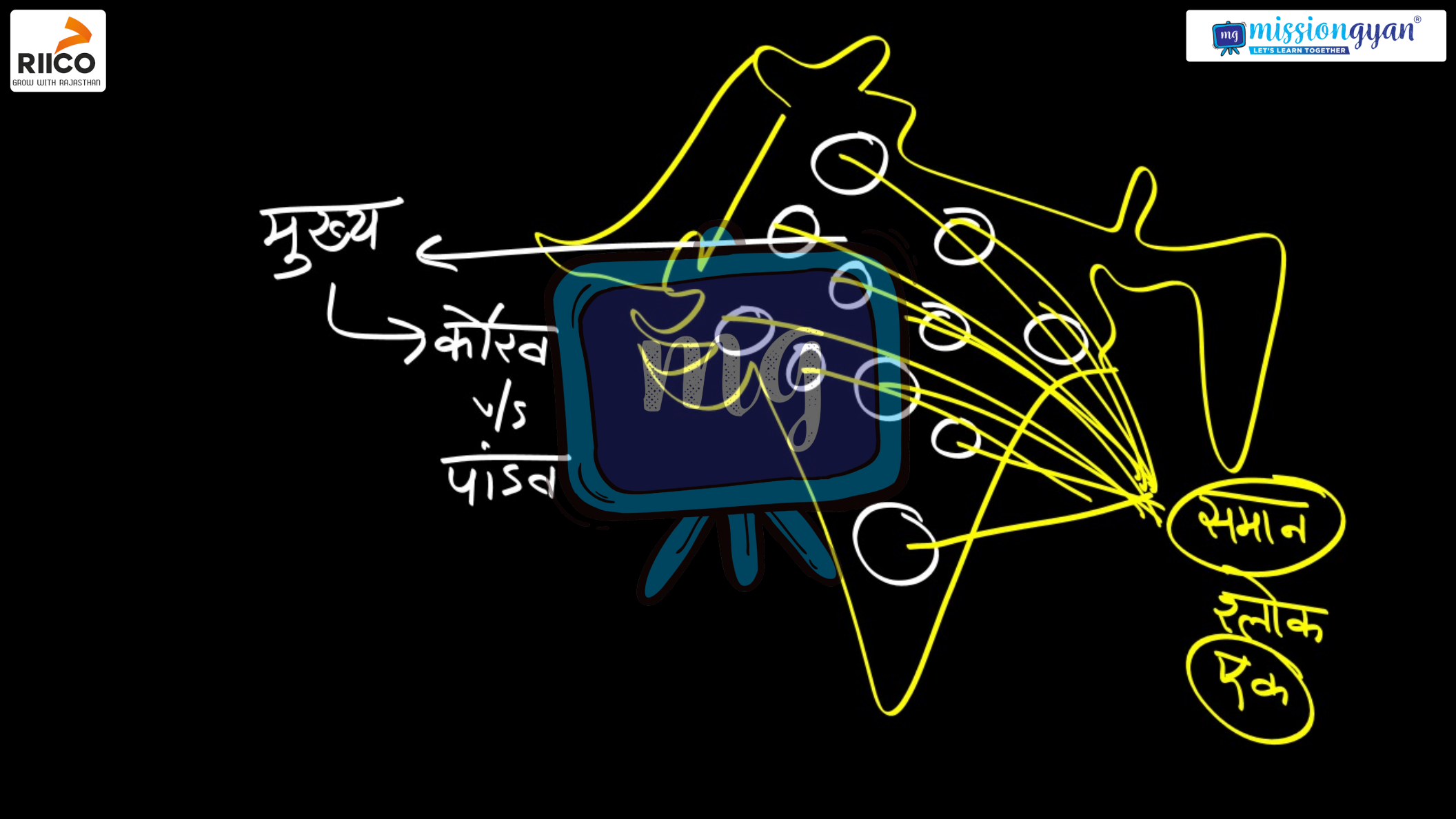
मुख्य
कोरव
v/s
पांडव
समान
श्लोक
5

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महाभारत का समालोचनात्मक विवरण

- 1919 में वी.एस. सुकथांकर के नेतृत्व में परियोजना शुरू हुई।
- देशभर की संस्कृत पांडुलिपियाँ एकत्र कर समान श्लोकों का चयन किया गया।
- 13,000 पृष्ठों का संस्करण तैयार करने में 47 वर्ष लगे।
- पांडुलिपियों में व्यापक समानताएँ और कई क्षेत्रीय भिन्नताएँ मिलीं।
- भिन्नताओं को पादटिप्पणियों व परिशिष्टों में दर्ज किया गया।
- बाद में पालि, प्राकृत और तमिल ग्रंथों से पता चला कि संस्कृत के आदर्श नियमों का हमेशा पालन नहीं होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

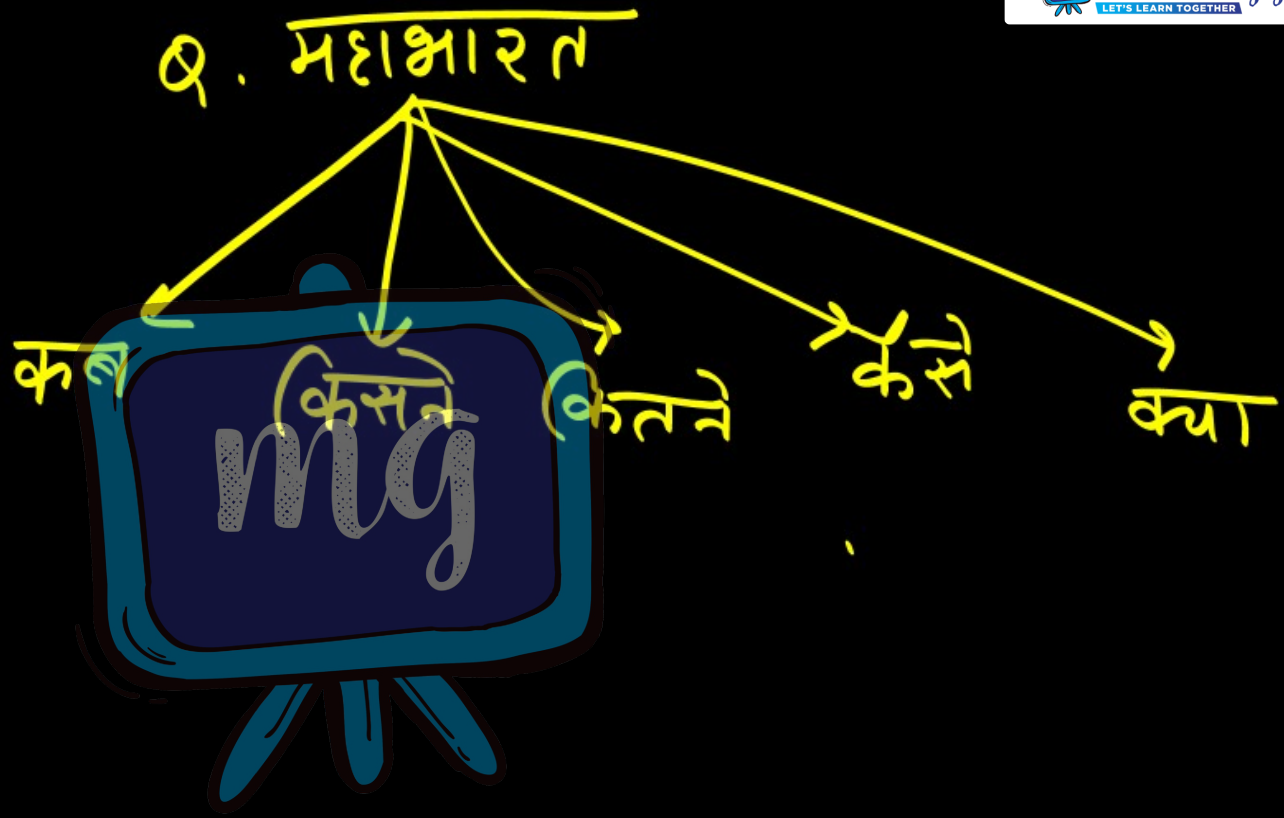

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बंधुता एवं विवाह

बंधुता एवं परिवार- कुल = परिवार,
जाति = संबंधियों का बड़ा समूह,
वंश = पीढ़ीगत संबंध।

- परिवार के सदस्य साथ रहते, काम करते और संसाधन व अनुष्ठान साझा करते थे।
- पारिवारिक/रक्त संबधों की परिभाषा समाजों में अलग-अलग थी।
- विशिष्ट परिवारों की जानकारी अधिक मिलती है; सामान्य परिवारों को समझना कठिन है।
- परिवार व बंधुता से लोगों की सोच और व्यवहार का पता चलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पितृवंशिक व्यवस्था के आदर्श :-

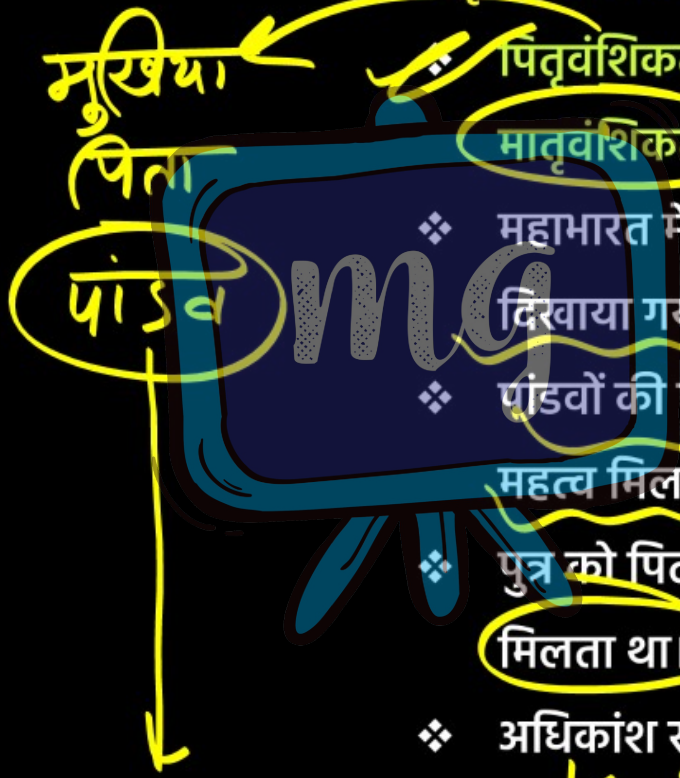

- पितृवंशिकता = वंश पिता से पुत्र;
- मातृवंशिकता = वंश माँ से।
- महाभारत में कौरव-पांडवों का भूमि व सत्ता संघर्ष दिखाया गया है।
- पांडवों की विजय के बाद पितृवंशिक उत्तराधिकार को महत्व मिला।
- पुत्र को पिता के बाद संपत्ति व सिंहासन का अधिकार मिलता था।
- अधिकांश राजवंश पितृवंशिक थे, लेकिन भाई, अन्य संबंधी या कभी स्त्रियाँ भी सत्ता संभालती थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. परिवर्तन (600ई॰पू॰ - 600ई॰)

Q. महाभारत

Q. Keywords.

Q. विद्युतीकरण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



विवाह के नियम

- अंतर्विवाह = अपने समूह में विवाह;
- बहिर्विवाह = गोत्र से बाहर विवाह
- बहुपत्नी = एक पुरुष की अनेक पत्नियाँ;
- बहुपति = एक स्त्री के अनेक पति।
- पितृवंशिक समाज में पुत्रियों को पैतृक संपत्ति में अधिकार नहीं था
- कन्यादान पिता का धार्मिक कर्तव्य माना गया।
- नगरों के विकास से सामाजिक जीवन जटिल हुआ, इसलिए ब्राह्मणों ने आचार संहिताएँ बनाईं।
- लगभग 500 ई.पू. से धर्मसूत्र व धर्मशास्त्र बने; मनुस्मृति (200 ई.पू.–200 ई.) प्रमुख थी।
- धर्मशास्त्रों में विवाह के 8 प्रकार बताए गए—पहले 4 उत्तम, शेष निंदित।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विवाह के 8 प्रकार (मनुस्मृति से)

- ब्रह्म विवाह – योग्य वर को कन्यादान।
- दैव विवाह – यज्ञ कराने वाले पुरोहित को कन्यादान।
- आर्ष विवाह – गाय-बैल के बदले कन्यादान।
- प्राजापत्य विवाह – कर्तव्य पालन की शर्त पर विवाह।
- असुर विवाह – धन देकर विवाह।
- गांधर्व विवाह – आपसी इच्छा से विवाह।
- राक्षस विवाह – बलपूर्वक अपहरण कर विवाह।
- पैशाच विवाह – कन्या की इच्छा के विरुद्ध विवाह।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विवाह के प्रकार

सामान्य

1. अ
2. ब
3. बहुपत्नी
4. बहुपति



4

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

गोत्र ?

स्त्री का गोत्र

- एक ब्राह्मणीय पद्धति जो लगभग 1000 ई.पू. के बाद से प्रचलन में आई, वह लोगों (खासतौर से ब्राह्मणों) को गोत्रों में वर्गीकृत करने की थी।
- प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था। तथा गोत्र के सदस्य ऋषि के वंशज माने जाते थे।
- गोत्रों के दो नियम महत्वपूर्ण थे :

1. विवाह के पश्चात स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था।
2. एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे।

गोत्र

महिला → नियम

1) पिता $\xrightarrow{\text{विवाह}}$ पति

2) गोत्र के बाहर

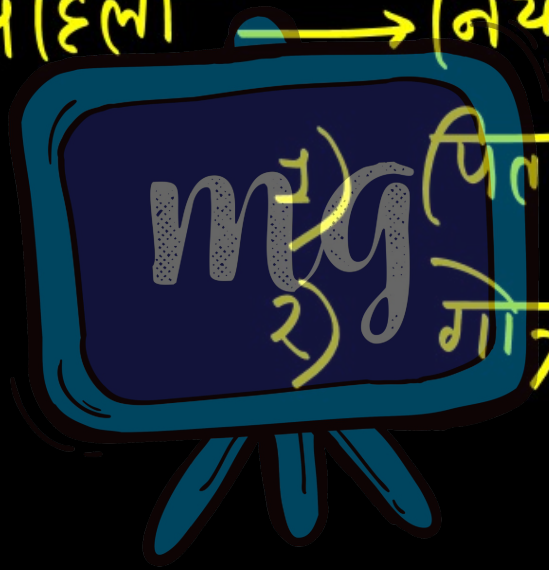

Q. 1000 ई पू. के आसपास ब्राह्मण वादी प्रथा के तहत गोत्र के आधार पर वर्गिकरण के नियमों का उल्लेख करें?

गोत्र

- इन नियमों का अनुसरण होता था या नहीं इस बात को जानने सातवाहनों जैसे प्रबल शासकों के वंश को देखते हैं।
- इन सातवाहन शासकों का पश्चिमी भारत और दक्कन के कुछ भागों पर शासन था (200 ई. -200 ई. तक)।
- सातवाहनों के कई अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर इतिहासकारों ने पारिवारिक और वैवाहिक रिश्तों का खाका तैयार किया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सतवाहन

महिला पिता ⟶ पति

1. सतवाहन पिता ×
   माता ×

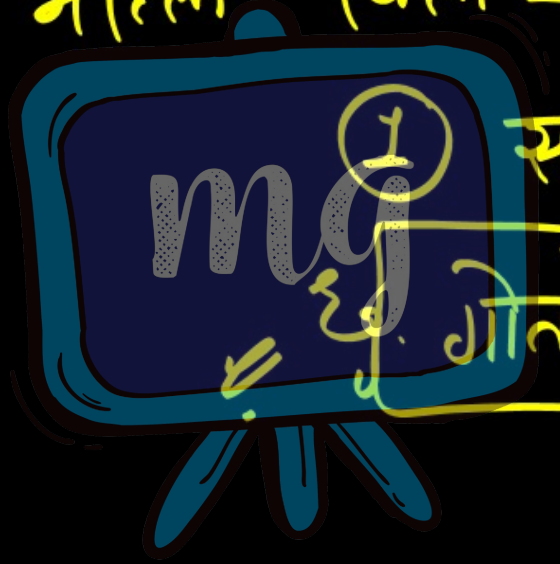

ई. गोतमि पुत्त सिरी सतकनि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सातवाहनों में सबसे प्रमुख शासक शातकर्णी ने सर्वप्रथम मां का गोत्र लगाना प्रारम्भ किया। उत्तरोत्तर ये प्रथा चलती रही।



उपनिषद में मातृनाम

बृहदारण्यक उपनिषद में जो आरंभिक उपनिषदों में से एक है।

आचार्यों और शिष्यों की उत्तरोत्तर पीढ़ियों की सूची मिलती है, जिसमें से कई लोगों को उनके मातृनामों से निर्दिष्ट किया गया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सातवाहन राजा बहुपत्नी प्रथा मानते थे।
- रानियाँ विवाह के बाद भी पिता का गोत्र बनाए रखती थीं।
- कुछ विवाह एक ही गोत्र/बंधुओं में हुए, जो बहिर्विवाह के विरुद्ध थे।
- इससे अंतर्विवाह जैसी वैकल्पिक प्रथाओं का पता चलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



क्या माताएँ महत्वपूर्ण थीं?

- सातवाहन राजाओं को उनके मातृनाम से चिह्नित किया जाता था। इससे यह प्रतीत होता है कि माताएँ महत्वपूर्ण थीं।
- यद्यपि माताऐं महत्वपूर्ण होने के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले बहुत सावधानी बरतनी होगी क्योंकि सातवाहन राजाओं के संदर्भ में हमें यह ज्ञात है कि सिंहासन का उत्तराधिकार पितृवंशिक होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक विषमाताऐं

वर्ण व्यवस्था के दायरे में और उससे परे :-

- 'जाति' शब्द एक सोपानात्मक सामाजिक वर्गीकरण को दर्शाता है।
- धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में एक आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया था।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि यह व्यवस्था जिसमें स्वयं उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है, एक दैवीय व्यवस्था है।
- शूद्रों और 'अस्पृश्यों' को सबसे निचले स्तर पर रखा जाता था।
- इस व्यवस्था में दर्जा संभवतः जन्म के अनुसार निर्धारित माना जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

ऋग्वेद

↳ पुरुषसूक्त

= कर्म

↓

जन्म



→ 4 वर्ण (समूह)

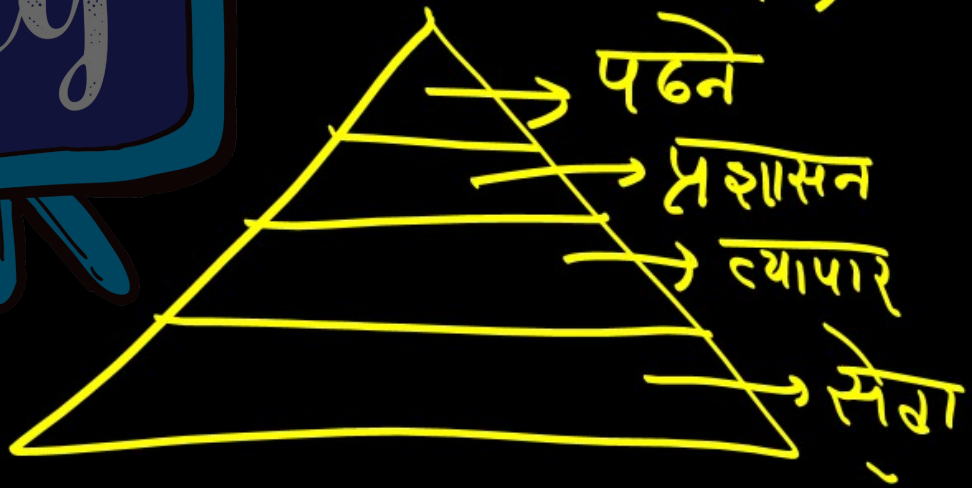

'उचित' जीविका :-

- ब्राह्मण – अध्ययन, वेद-शिक्षा, यज्ञ व दान।
- क्षत्रिय – युद्ध, सुरक्षा, न्याय, यज्ञ व दान।
- वैश्य – कृषि, पशुपालन, व्यापार, यज्ञ व दान।
- शूद्र – तीनों उच्च वर्णों की सेवा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

P५९

अक्षत्रिय राजा?

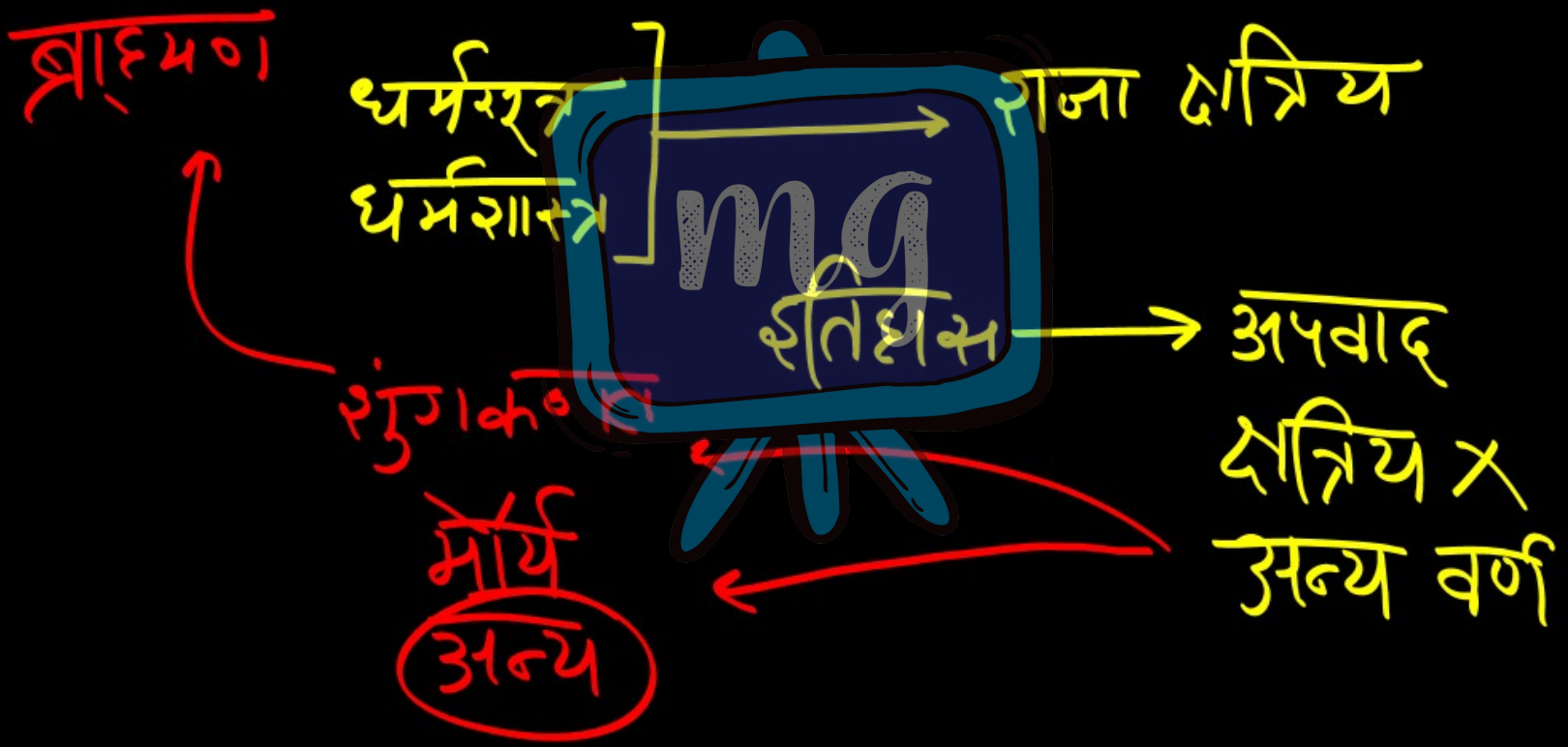

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



शक शासक को चित्रित करता
चांदी का सिक्का (लगभग 200 ई.)

अक्षत्रिय राजा :-

- शास्त्रों में राजा को क्षत्रिय माना गया, पर कई शासक अन्य वर्णों से थे।
- मौर्यों की सामाजिक उत्पत्ति विवादित थी; शुंग व कण्व ब्राह्मण थे।
- शक विदेशी माने गए, फिर भी रुद्रदामन ने संस्कृत परंपरा अपनाई।
- सातवाहन स्वयं को ब्राह्मण बताते थे, पर राजसत्ता व विवाह में वर्ण-नियम हमेशा नहीं माने गए।
- इससे स्पष्ट है कि राजसत्ता केवल जन्म पर निर्भर नहीं थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





4

जाति और सामाजिक गतिशीलता

- जाति जन्म-आधारित थी, लेकिन जातियों की संख्या वर्णों से कहीं अधिक थी।
- निषाद व सुवर्णकार जैसे नए समुदायों को अलग जातियों में रखा गया।
- समान पेशे वाली जातियाँ श्रेणियों (गिल्ड) में संगठित होती थीं।
- मंदसौर अभिलेख में रेशम बुनकरों के लाट से दशपुर आने का उल्लेख है।
- श्रेणियाँ व्यापार/शिल्प के साथ सामूहिक कार्य भी करती थीं; उन्होंने सूर्य मंदिर बनवाया।

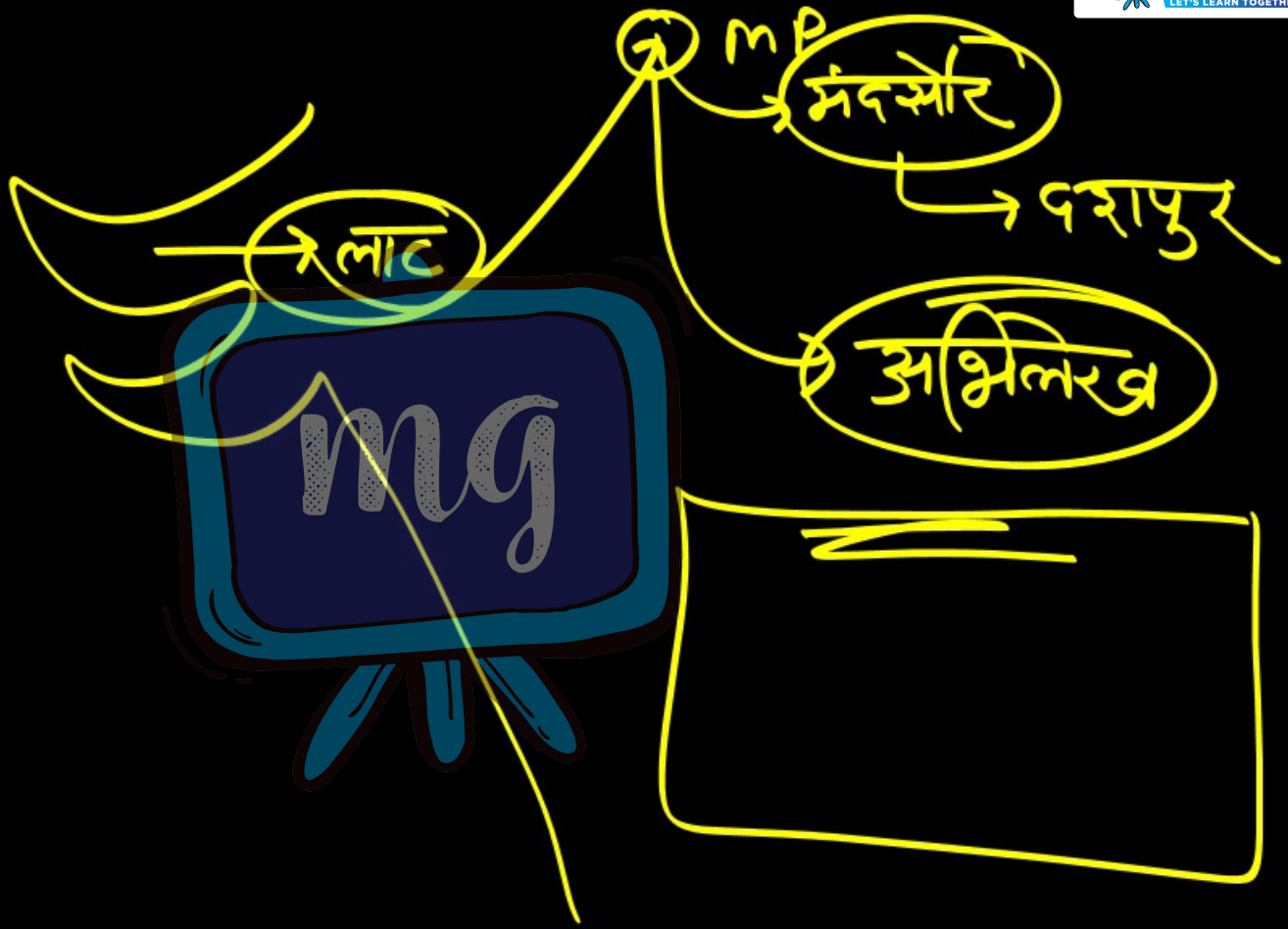
MP
मंदसौर
दशपुर
लाट
अभिलेख
mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

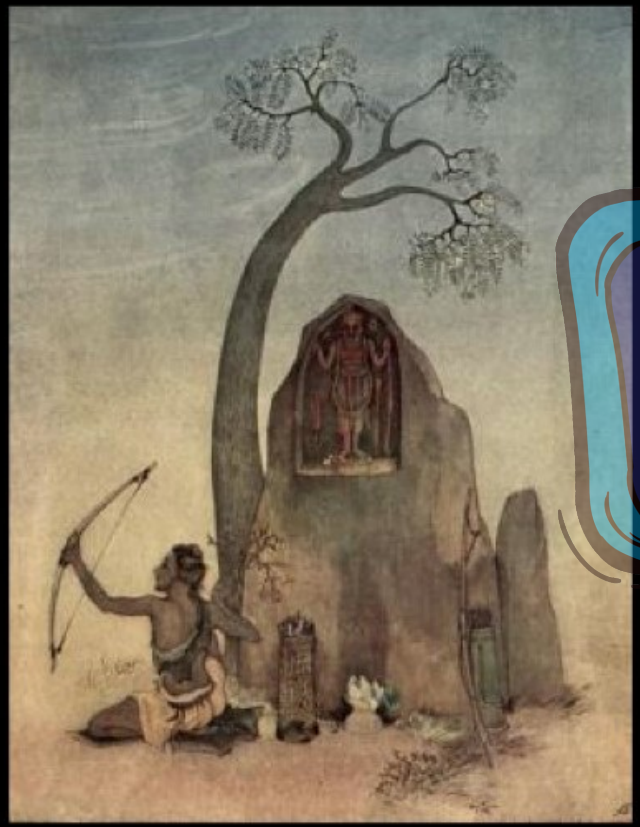

चार वर्णों से परे : एकीकरण

- कई समुदाय वर्ण व्यवस्था से बाहर थे।
- वनवासी, शिकारी व निषाद इनमें प्रमुख थे।
- घुमंतू पशुपालकों को भी अलग दृष्टि से देखा जाता था।
- गैर-संस्कृत भाषी लोगों को म्लेच्छ कहा जाता था।
- फिर भी विभिन्न समुदायों में विचारों व संबंधों का आदान-प्रदान होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



चार वर्णों से परे : अधीनता और संघर्ष

- कुछ समुदायों को अस्पृश्य मानकर सामाजिक रूप से अलग रखा गया।
- शव-संस्कार व मृत पशुओं से जुड़े लोगों को चाण्डाल कहा जाता था।
- चाण्डाल गाँव के बाहर रहते और मृतकों की अंत्येष्टि जैसे कार्य करते थे।
- फा-शियान व ह्वेनसांग ने इनके अलग रहने का उल्लेख किया।
- ग्रंथों के नियम और वास्तविक सामाजिक जीवन हमेशा समान नहीं थे।

Q. मनुस्मृति में चाण्डालों के लिए निर्धारित कर्तव्यों का समालोचनात्मक परिक्षण करें ?

- चाण्डाल गाँव के बाहर रहते थे।
- वे त्यागे बर्तन, मृतकों के वस्त्र व लोहे के आभूषण इस्तेमाल करते थे।
- रात में गाँव-नगर में प्रवेश नहीं कर सकते थे
- ।वे अंत्येष्टि और वधिक का कार्य करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मंडसौर अभिलेख ?

- क्या
- नाम
- कहानी
- वर्ग / जाति



Q. चाण्डाल

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जन्म से परे



संसाधन और प्रतिष्ठा :-

- यदि हम आर्थिक संबंधों पर विचार करें तो देखेंगे कि दास, भूमिहीन खेतीहर मजदूर, शिकारी, मछुआरे, पशुपालक, किसान, ग्राम मुखिया, शिल्पकार, वणिक और राजा सभी का उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक-अभिनायक के रुप में उद्भव हुआ।
- उनके सामाजिक स्थान इस बात पर निर्भर करते थे कि आर्थिक संसाधनों पर उनका कितना नियंत्रण हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

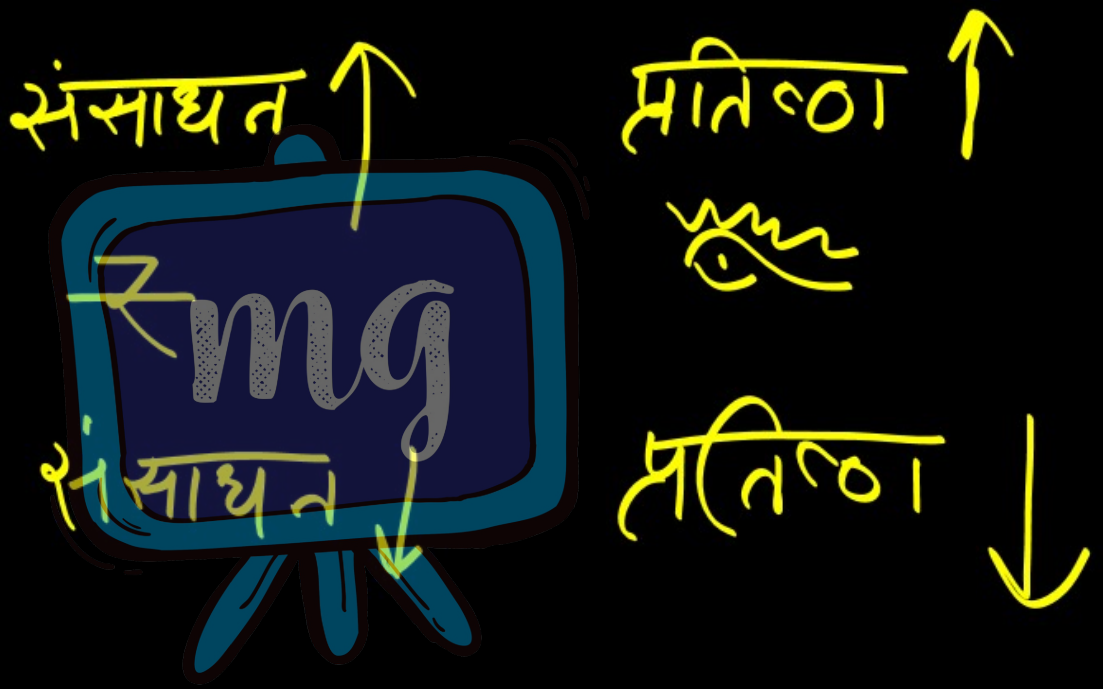

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संपत्ति पर स्त्री और पुरुष के भिन्न अधिकार :-

- महाभारत के एक महत्वपूर्ण प्रकरण पर विचार करते हैं.....
- कौरव और पांडव के बीच लंबे समय से चली आ रही प्रतिस्पर्धा के फलस्वरुप दुर्योधन ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीडा के लिए आमंत्रित किया।
- युधिष्ठिर अपने प्रतिद्वन्द्वी द्वारा धोखा दिये जाने के कारण इस द्यूत में स्वर्ण, हस्ति, रथ, दास, सेना, कोष, राज्य तथा अपनी प्रजा की संपत्ति, अनुजों और फिर स्वयं को भी दाँव पर लगा कर गँवा बैठे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पैतृक जायदाद

पुत्रों के बीच
समान वितरण

ज्येष्ठ पुत्र ↑



विवाह → स्त्रीधन

पुत्र ✓
पति X

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

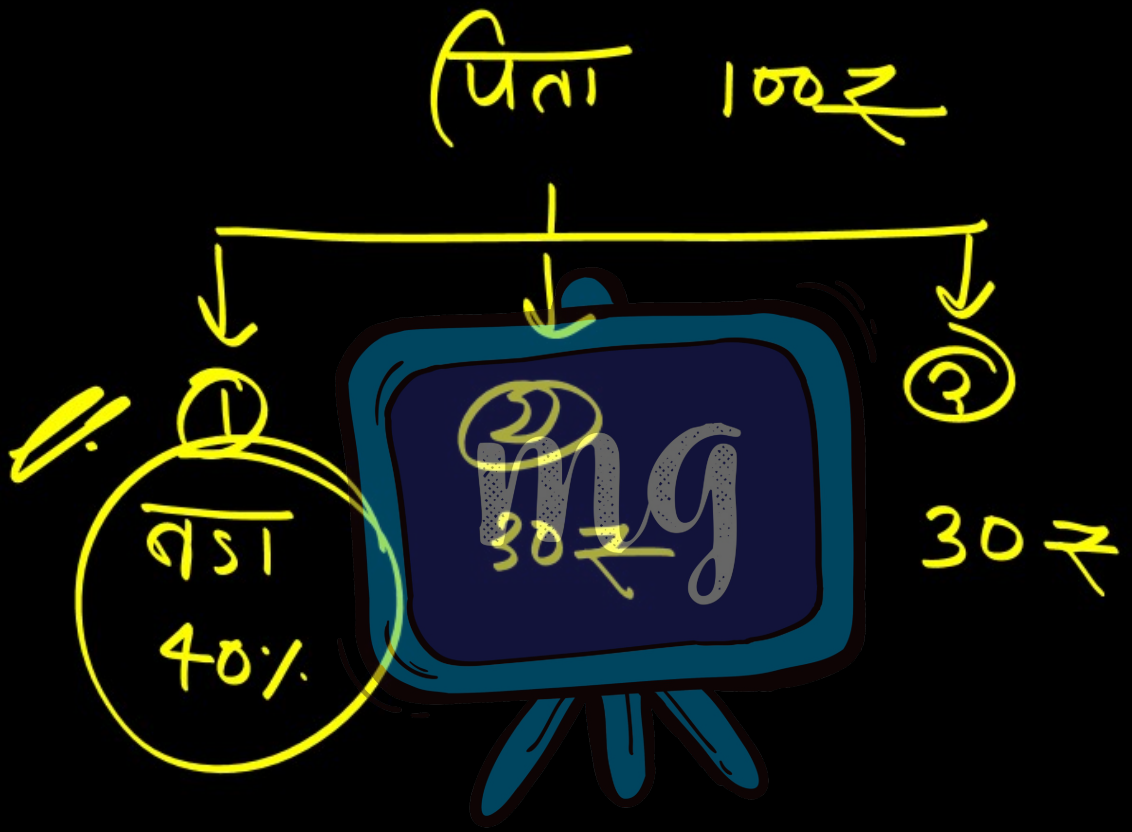

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

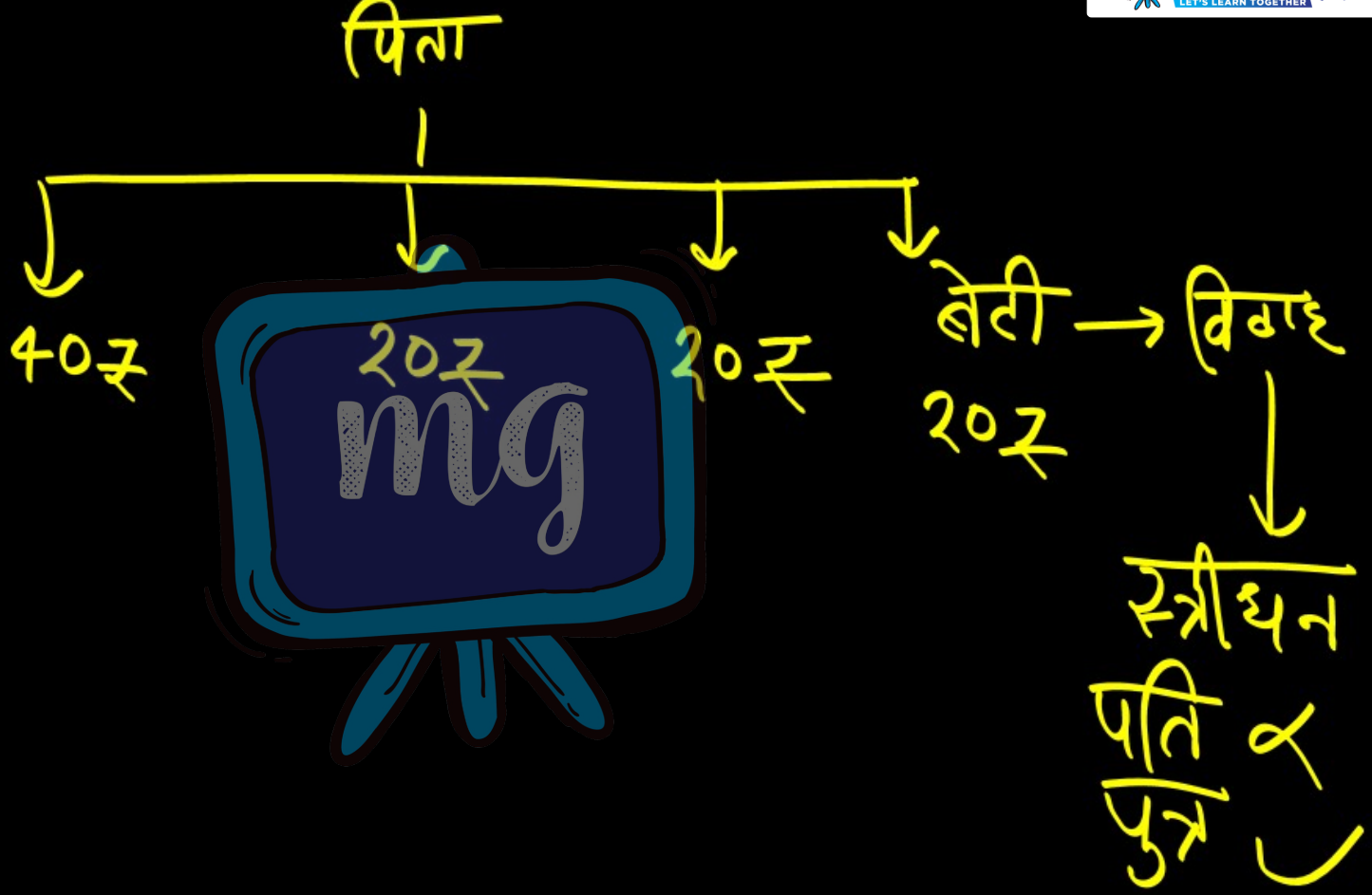

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक धनाढ्य वाकाटक-महिषी प्रभावती गुप्त के साथ-साथ अनेक अभिलेखीय व साहित्यिक-साक्ष्य इशारा करते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाऐं तो संसाधनों पर अपनी पैंठ रखती थी जबकि सामान्यतः भूमि, पशु व धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था।
- इसलिए स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से ही ज्यादा प्रखर हुई।

मनुस्मृति



- विरासत
- खोज
- खरीद
- विजित
- निवेश
- कार्य
- सज्जनों



- वैवाहिक अग्नि
- वधुगमन
- पिता
- माता
- भ्राता
- पति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

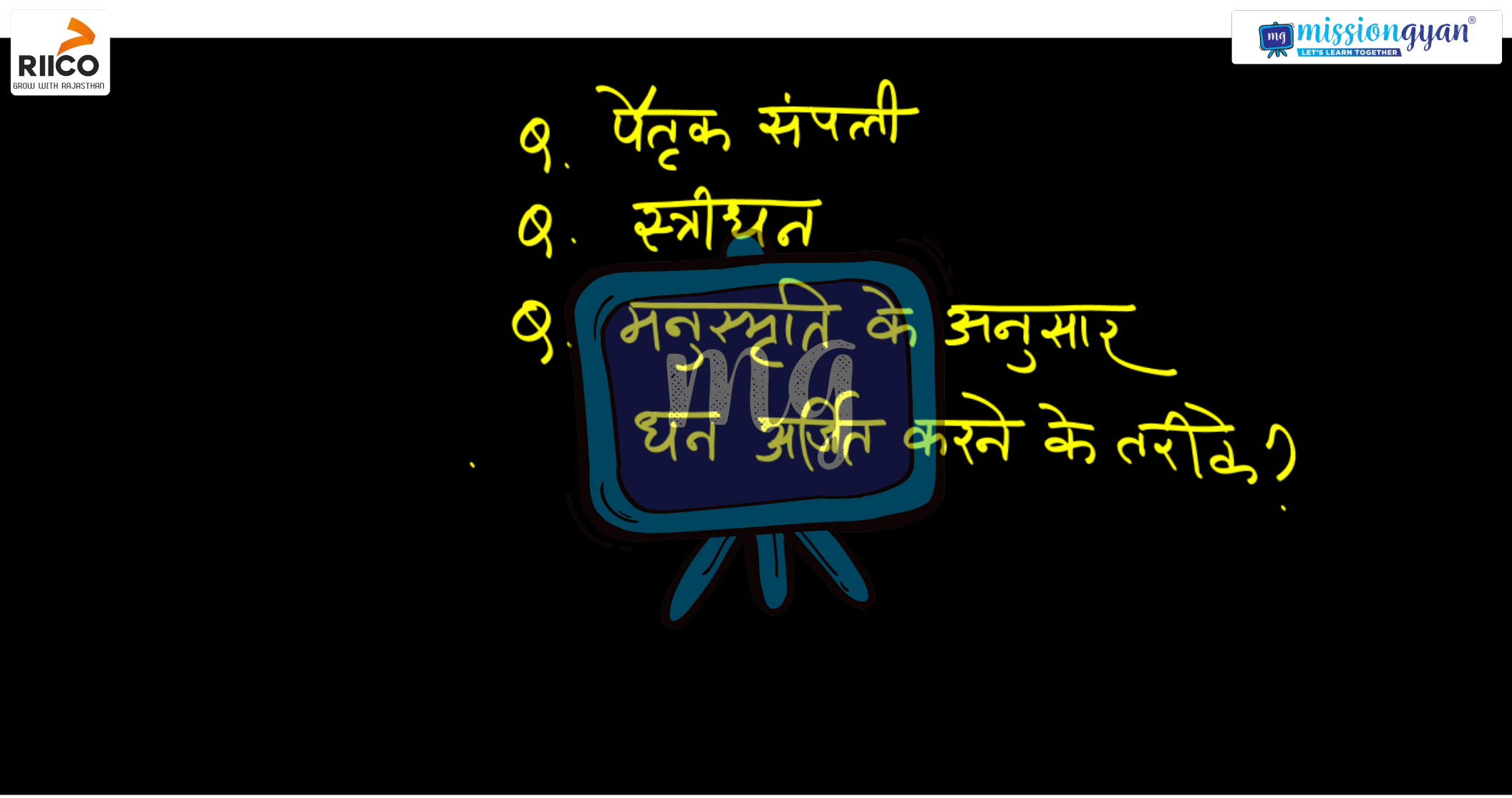

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



वर्ण और संपत्ति के अधिकार :-

- ब्राह्मणीय ग्रंथों के अनुसार संपत्ति पर अधिकार का एक और आधार वर्ण था। (लैंगिक आधार के अतिरिक्त)
- शूद्रों के लिए एकमात्र 'जीविका' ऐसी सेवा थी जिसमें हमेशा उनकी इच्छा शामिल नहीं होती थी।
- हालांकि तीनों उच्च वर्णों के पुरुषों के लिए विभिन्न जीविकाओं की संभावना रहती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यदि इन सब विधानों को वास्तव में कार्यान्वित किया जाता है तो ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे धनी व्यक्ति होते।
- यह कुछ हद तक वास्तविकता से मेल भी खाता है साहित्यिक परम्पराओं में पुरोहितों और राजाओं का वर्णन मिलता है जिसमें राजा अधिक धनी चित्रित होते थे। पुरोहित भी सामान्यतः धनी दर्शाये जाते हैं। हालांकि यदा-कदा निर्धन ब्राह्मण का भी चित्रण मिलता है।

वर्णभेद की आलोचना :-

- एक ओर जहां समाज के ब्राह्मणीय दृष्टिकोण को धर्मसूत्र और धर्मशास्त्रों में संहिताबद्ध किया जा रहा था वहीं अन्य परम्पराओं ने वर्ण व्यवस्था की आलोचना प्रस्तुत की।
- इनमें सर्वविदित आलोचनाऐं प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में (600 ई. पू. से) विकसित हुई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बौद्धों ने इस बात को अंगीकार किया कि समाज में विषमता मौजूद थी किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थाई रहेंगे।
- बौद्धों ने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

एक वैकल्पिक सामाजिक रुपरेखा संपत्ति में भागीदारी

- अभी तक हमने वे परिस्थितियां देखी जहां लोग अपनी संपत्ति के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा का दावा करते थे, या फिर उन्हें वह स्थिति प्रदान की जाती थी।
- यद्यपि समाज में अन्य संभावनाऐं भी थीं जहां दानशील आदमी का भी सम्मान किया जाता था तथा कृपण व्यक्ति या जो स्वयं अपने लिए संपत्ति संग्रह करता था, घृणा का पात्र होता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- प्राचीन तमिलकम (तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल) एक ऐसा ही क्षेत्र था जहां उपरोक्त आदर्शों को संजोया जाता था।
- इस क्षेत्र में 2000 वर्ष पहले अनेक सरदारियां (चोल, चेर, पांड्य) थीं। ये सरदार अपनी प्रशंसा गाने वाले चारण और कवियों के आश्रयदाता होते थे।
- तमिल भाषा के संगम साहित्य में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का अच्छा चित्रण है जो इस ओर इंगित करता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हालांकि धनी और निर्धन के बीच विषमताएं थीं लेकिन जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण था उनसे यह अपेक्षा की जाती थी वे मिल-बाँट कर उसका उपयोग करें।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक विषमताओं की व्याख्या

एक सामाजिक अनुबंध :-

- बौद्धों ने समाज में फैली विषमताओं के संदर्भ में एक अलग अवधारणा प्रस्तुत की।
- साथ ही समाज में फैले अंत र्विरोधों को नियमित करने के लिए जिन संस्थाओं की आवश्यकता थी उन पर भी अपना दृष्टिकोण सामने रखा।
- सुत्तपिटक नामक ग्रंथ में एक मिथक वर्णित है जो यह बताता है कि प्रारम्भ में मानव विकसित नहीं थे। वनस्पति जगत भी अविकसित था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

"क्या हम एक ऐसे मनुष्य का चयन करें जो उचित बात पर क्रोधित हो।

जिसकी प्रताड़ना की जानी चाहिए उसको प्रताड़ित करें

जिसे निष्कासित किया जाना हो उसे निष्कासित करें।

बदले में हम उसे चावल का अंश देंगे.... सब लोगों द्वारा चुने जाने के कारण उसे महासम्मत की उपाधि प्राप्त होगी।"

❖ इससे यह ज्ञात होता है कि राजा का पद लोगों द्वारा चुने जाने पर निर्भर करता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

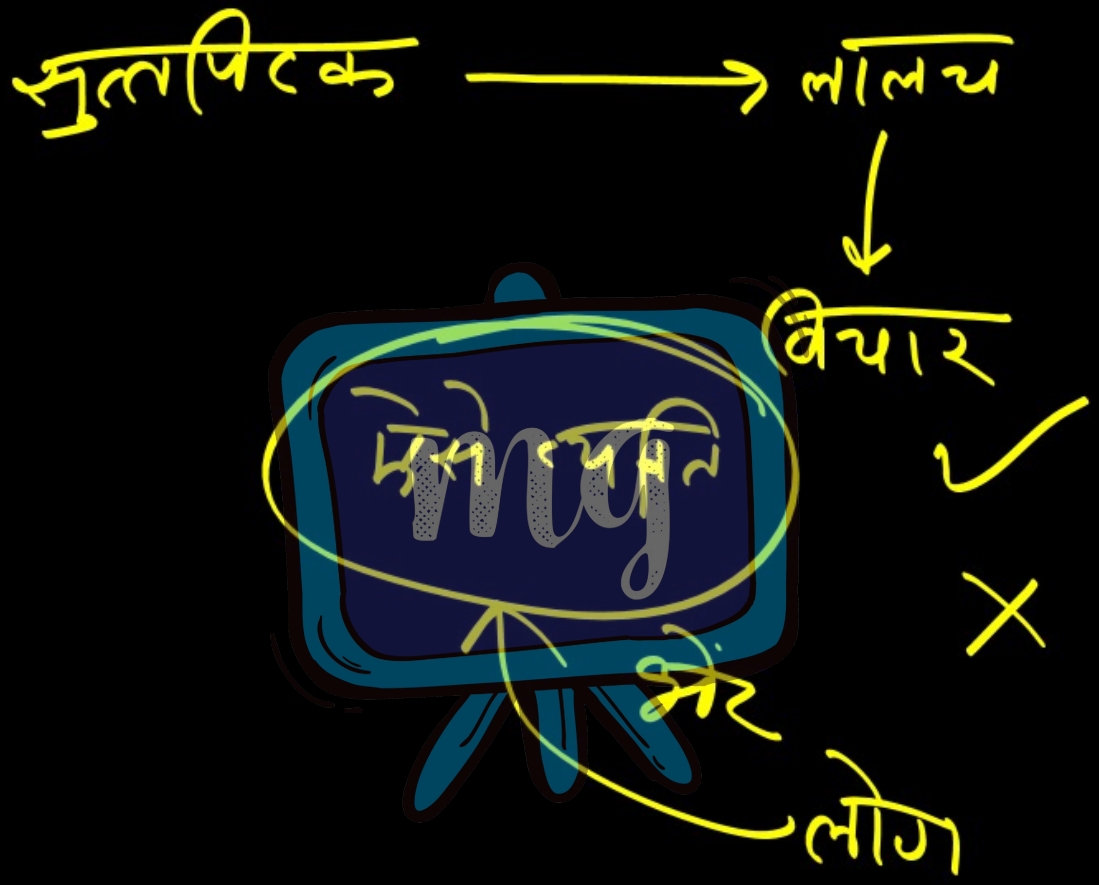

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- राजा का पद लोगों के चुनाव पर आधारित था।
- चुने राजा को महासम्मत कहा गया।
- कर राजा की सेवाओं के बदले दिया जाता था।
- यह कथा समाज व व्यवस्था में मानवीय भूमिका और परिवर्तन की संभावना दर्शाती है।



Q. सुत्तपिटक में वर्णित कथा को स्पष्ट करें?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

साहित्यिक स्त्रोतों का इस्तेमाल

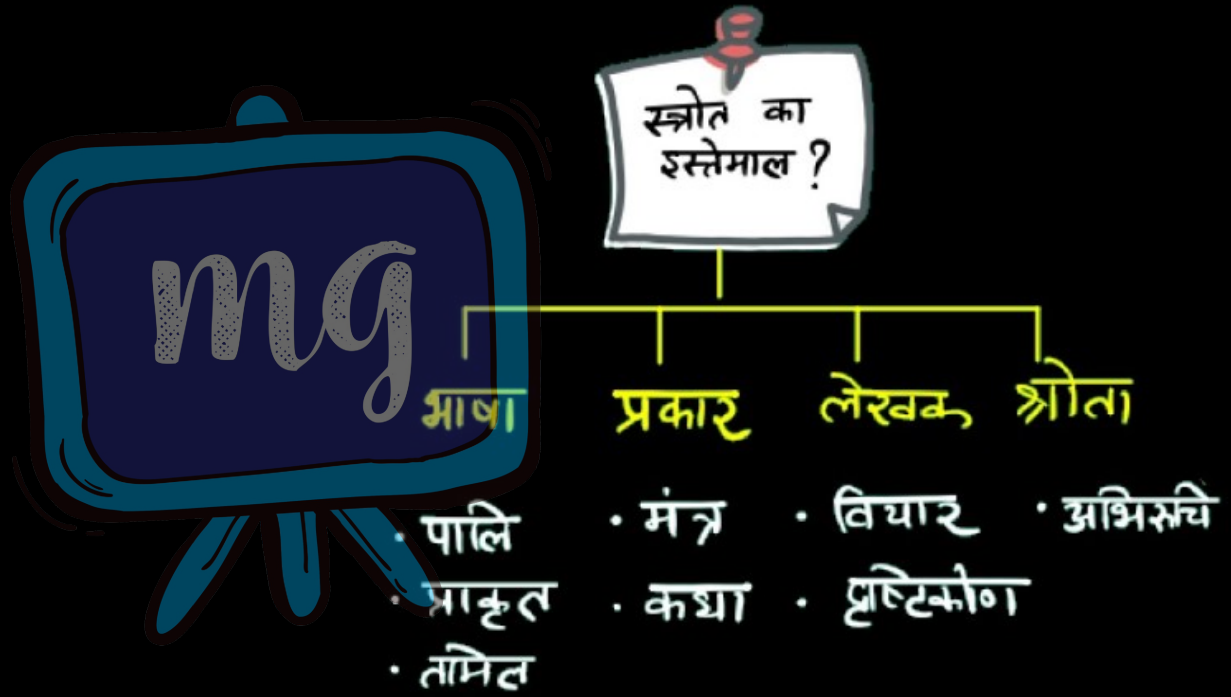

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भाषा एवं विषय वस्तु

अब हम ग्रंथ की भाषा को देखते हैं

- महाभारत का पाठ संस्कृत में है किन्तु महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों और प्रशस्तियों (जैसे प्रयाग प्रशस्ति) की संस्कृत से कहीं अधिक सरल है अतः संभव है कि इस ग्रंथ को व्यापक स्तर पर समझा जाता था।
- इतिहासकार इस ग्रंथ की विषयवस्तु को 2 मुख्य शीर्षकों में रखते हैं–

(i) आख्यान (कहना या कहानी)

(ii) उपदेशात्मक

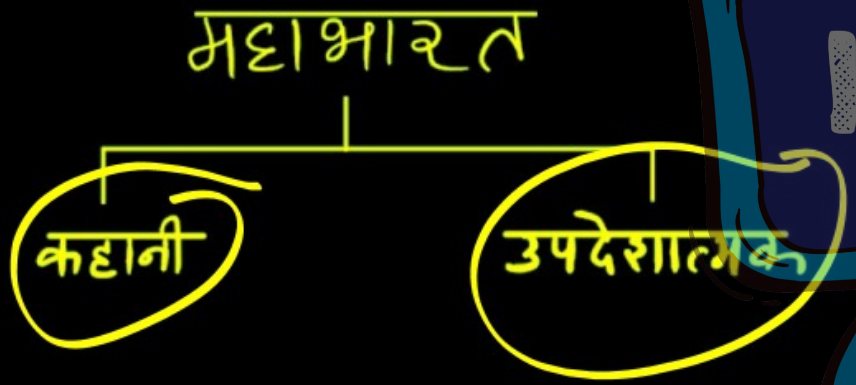

- आख्यान में कहानियों का संग्रह है और उपदेशात्मक में सामाजिक आचार विचारों के मानदंडों का चित्रण है।
- यद्यपि यह विभाजन पूरी तरह से एकांकी नहीं है। आख्यानों में समाज के लिए सबक (उपदेश) हैं तथा उपदेशात्मक अंशों में कहानियां हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए

महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश भगवद्गीता है जहां कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं। इस दृश्य को चित्रों और मूर्तिकला में कई बार दर्शाया गया है। इस चित्र का काल अठारहवीं शताब्दी है।

सुत / भाट

इतिहासकारों का मानना है कि महाभारत एक नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गये।

- आरंभिक संस्कृत परम्परा के अनुसार महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है जिसका अर्थ है 'ऐसा ही था'।
- कुछ इतिहासकारों का मानना है कि स्वजनों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है।
- अन्य इस बात की ओर इंगित करते हैं कि हमें युद्ध की पुष्टि किसी और साक्ष्य से नहीं होती।

लेखक (एक या कई) और तिथियां



लिपिक श्री गणेश

परंपरा के अनुसार व्यास ने इस ग्रंथ को श्रीगणेश को लिखवाया।
यह चित्र महाभारत के फारसी अनुवाद (1740-50) से लिया गया है।

यह ग्रंथ किसने लिखा है?

- संभवतः मूल कथा के रचयिता भाट सारथी थे जिन्हें 'सूत' कहा जाता था।
- ये भाट, क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्धक्षेत्र में जाते थे और उनकी विजय व उपलब्धियों के बारे मे 'कविताएँ लिखते थे।
- इन रचनाओं का प्रेषण मौखिक रूप से हुआ।
- 5वीं शताब्दी ई.पू. से ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह वह समय था जब कुरु और पांचाल जिनके इर्द-गिर्द महाभारत की कथा घूमती है, मात्र सरदारी से राजतंत्र के रूप में उभर रहे थे।
- ये नये राजा अपने इतिहास को अधिक नियमित रूप से लिखना चाहते थे।
- यह भी संभावना है कि नये राज्यों की स्थापना से होने वाली उथल-पुथल के कारण पुराने सामाजिक मूल्यों के स्थान पर नवीन मानदंडों की स्थापना हुई जिसका इस कहानी के कुछ भागों में वर्णन मिलता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 200 ई. पू.-200 ई. के बीच जब विष्णु देवता की आराधना प्रभावी हो रही थी, इस महाकाव्य के महत्वपूर्ण नायक 'श्रीकृष्ण' को विष्णु का रूप बताया जा रहा था।
- कालान्तर में 200-400 ई. के बीच मनुस्मृति से वृहत उपदेशात्मक प्रकरण महाभारत में जोड़े गये। इन सब परिवर्धनों के कारण यह ग्रंथ जो प्राथमिक रूप में 10000 श्लोकों से भी कम का रहा होगा, बढ़कर 1 लाख श्लोकों वाला हो गया।
- साहित्यिक परंपरा में इस वृहत रचना के रचयिता ऋषि व्यास माने जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सदृश्यता की खोज



- 1951–52 में बी.बी. लाल ने हस्तिनापुर में उत्खनन किया।
- इसे कुरुओं की राजधानी हस्तिनापुर से जोड़ा गया।
- यहाँ 5 आबादी स्तर मिले।
- दूसरा स्तर (1200–700 ई.पू.) – मिट्टी/सरकंडे के घर।
- तीसरा स्तर (600–300 ई.पू.) – ईंटों के घर, नालियाँ व वलय-कूप।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

हस्तिनापुर

महाभारत के आदिपर्वन से इस नगर का चित्रण इस प्रकार मिलता है : यह नगर जो समुद्र की भाँति भरा हुआथा, जो सैकड़ों प्रासादों से संकुलित था। इसके सिंहद्वार, तोरण तथा कंगूरे सघन बादलों की तरह घुमड़ रहे थे। यह इन्द्र की नगरी के समान शोभायमान था।

- इस नगर का यह चित्रण महाकाव्य के मुख्य कथानक में 600 ई. पू. के बाद में जोड़ा गया होगा। जब इस क्षेत्र में नगरों का विकास हुआ होगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यह मात्र कवियों की कल्पना की उड़ान भी हो सकती है क्योंकि इसे किसी भी साक्ष्य के द्वारा प्रमाणित नहीं किया जा सकता।



हस्तिनापुर में उत्खनित एक दीवार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेखक द्वारा बहुपति विवाह संबंध का चित्रण इस बात की ओर इंगित करता है कि संभवतः यह प्रथा शासकों के विशिष्ट वर्ग में किसी काल में मौजूद रही होगी।
- विभिन्न स्पष्टीकरण इस बात को भी व्यक्त करता है कि बहुपति प्रथा समय के साथ उन ब्राह्मणों में अमान्य हो गई जिन्होंने कई शताब्दियों के दौरान इस ग्रंथ को पुनर्निर्मित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ इतिहासकारों की राय है कि ब्राह्मणों की नजरों में बहुपति प्रथा अमान्य और अवांछित थी तथा यह हिमालय क्षेत्र में प्रचलन में भी। (और आज भी है)।
- यह भी कहा जाता है कि युद्ध के समय स्त्रियों की कमी के कारण बहुपति प्रथा को अपनाया गया यानि संकट की स्थिति में इसे अपनाया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ स्त्रोत इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि बहुपति प्रथा न तो विवाह पद्धति थी और ना ही यह अधिक प्रचलित थी। फिर क्यों इस ग्रंथ के रचनाकार ने इस प्रथा को महाभारत के प्रमुख पात्रों के साथ जोड़कर देखा तो शायद हो सकता है कि सृजनात्मक साहित्य की अपनी कथा संबंधी जरुरतों को पूरा करना होता है जो हमेशा समाज की मौजूदा वास्तविकताओं को नहीं दर्शाती।

एक गतिशील ग्रंथ

- महाभारत के अनेक भाषाई पाठांतर बने।
- विभिन्न क्षेत्रों की कहानियाँ इसमें जुड़ती गईं।
- इसकी मुख्य कथा की कई पुनर्व्याख्याएँ हुईं।
- इसके प्रसंग मूर्तिकला, चित्रकला, नाटक और नृत्य में भी दिखाए गए।

